रिसर्च जरनल ऑफ सोशल एण्ड लाइफ साइन्सेस

Peer- Reviewed Research Journal

UGC Journal No. (Old) 40942 Impact Factor 5.125 (IIFS) Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory © ProQuest, U.S.A. Title Id: 715205



2022 www.researchjournal.in

अंक 37 हिन्दी संस्करण

वर्ष - 19

जुलाई-दिसम्बर 2022

रिसर्च जरनल ऑफ सोशल एण्ड लाइफ साइन्सेस

Peer-Reviewed Research Journal

UGC Journal No. (Old) 40942 Impact Factor 5.125 (IIFS) Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, ProQuest U.S.A. Title Id: 715205

अंक-37

हिन्दी संस्करण

वर्ष-19

जुलाई - दिसम्बर 2022

डॉ. अखिलेश शुक्ल

ऑनरेरी सम्पादक प्राध्यापक, समाजशास्त्र एवं समाजकार्य विभाग उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान, नैक 'ए' ग्रेड शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.) प्रतिष्ठित भारतेन्दु हरिश्चन्द्र एवार्ड तथा पं. गोविन्द वल्लभ पंत एवार्ड से सम्मानित akhileshtrscollege@gmail.com

डॉ. संध्या शुक्ल

प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान, नैक 'ए' ग्रेड शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.) drsandhyatrs@gmail.com

डॉ. गायत्री शुक्ल

अतिरिक्त निदेशक, सेन्टर फॉर रिसर्च स्टडीज, रीवा shuklagayatri@gmail.com

डॉ. आर. एन. शर्मा

सेवानिवृत्त आचार्य, उच्च शिक्षा, रीवा rnsharmanehru@gmail.com



सेन्टर फॉर रिसर्च स्टडीज, रीवा

की मुख्य शोध पत्रिका म.प्र. सोसायटी रजिस्ट्रेशन एक्ट, 1973 के अंतर्गत पंजीकृत पंजीयन क्रमांक 1802, सन् 1997

विषय विशेषज्ञ/परामर्श मण्डल

- 1. डॉ. अरविंद जोशी, सेवानिवृत आचार्य, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय वाराणसी arvindvns@outlook.com
- 2. डॉ. रामशंकर, कुलपति, पं. शम्भूनाथ शुक्ल विश्वविद्यालय, शहडोल rs dubey@yahoo.com
- 3. डॉ. डी. एस. राजपूत, आचार्य, डॉक्टर हरीसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय सागर drdiwakarrajeut@rediffmail.com
- 4. डॉ. बी. के. सिंह, आचार्य, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी imdrbrajesh.kv@gmail.com
- 5. डॉ. अंजली श्रीवास्तव, सेवानिवृत आचार्य, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा

anjali apsu@rediffmail.com

- 6. डॉ. बी. पी. बडोला, सेवानिवृत्त आचार्य, कांगड़ा हिमाचंल प्रदेश bpbadola@gmail.com
- 7. डॉ. आभा सक्सेना, सह प्राध्यापक, अग्रसेन कन्या स्वशासी महाविद्यालय वाराणसी drabhasaxena7@gmail.com
- 8. डॉ. प्रज्ञा मिश्रा, आचार्य, महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट pragyamishramgcgv@gmail.com
- 9. डॉ. आशीष सक्सेना, आचार्य, इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद उत्तर प्रदेश। ashish.ju@gmail.com
- 10. डॉ. ज्योति उपाध्याय, आचार्य, विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन मध्य प्रदेश drjyotiupadhyay11@gmail.com
- 11. डॉ. प्रमिला पुनिया, सह प्राध्यापक, इतिहास, राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर राजस्थान pramilapoonia@rediffmail.com
- 12. डॉ. मृदुल जोशी, आचार्य, गुरुक्तुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार dr mriduljoshi@yahoo.com
- 13. डॉ. शैलजा दुबे, प्राध्यापक, शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई कन्या स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय भोपाल shailjadubey70@yahho.in
- 14. डॉ. प्रमिला श्रीवास्तव, आचार्य, शासकीय कला महाविद्यालय कोटा राजस्थान dr21pramila@gmail.com
- 15. डॉ. जयशंकर शाही, आचार्य, अलवर राजस्थान jayshankarshahi@gmail.com
- 16. डॉ.एन. पी. त्रिपाठी, सेवानिवृत्त आचार्य, रीवा मध्य प्रदेश
- 17. डॉ. राजेश भट्ट, एच. एन. बी. केंद्रीय विश्वविद्यालय, श्रीनगर गढ़वाल, उत्तराखंड rajeshbhatt11@gmail.com

Guide Lines

- **General:** English and Hindi Editions of Research Journal are published separately. Hence Research Papers can be sent in Hindi or English.
- Manuscript of research paper: It must be original and typed in double space on the one side of paper (A-4) and have a sufficient margin. Script should be checked before submission as there is no provision of sending proof. It must include Abstract, Keywords, Introduction, Methods, Analysis, Results and References. Hindi manuscripts must be in Devlys 010 or Kruti Dev 010 font, font size 14 and in double spacing. All the manuscripts should be in two copies and in Email also. Manuscripts should be in Microsoft word program. Authors are solely responsible for the factual accuracy of their contribution.
- References: References must be listed cited inside the paper and alphabetically in the order- Surname, Name, Year in bracket, Title, Name of book, Publisher, Place and Page number in the end of research paper as under- Shukla Akhilesh (2018) Criminology, Gayatri Publications, Rewa: Page 12.
- **Review System:** Every research paper will be reviewed by two members of peer review committee. The criteria used for acceptance of research papers are contemporary relevance, contribution to knowledge, clear and logical analysis, fairly good English or Hindi and sound methodology of research papers. The Editor reserves the right to reject any manuscript as unsuitable in topic, style or form without requesting external review.

लेखकों से निवेदन-

- रिसर्च जरनल ऑफ सोशल एण्ड लाइफ साइंसेज (ISSN-0973-3914) सेन्टर फॉर रिसर्च स्टडीज की मुख्य शोध पत्रिका है, जो मानव संसाधन मंत्रालय तथा पंजीयक समाचार पत्र एवं पत्रिका, भारत सरकार नई दिल्ली द्वारा पंजीकृत हैं।
- शोध पत्रिका उलिरच इन्टरनेशनल पीरियाडिकल्स डाइरेक्ट्री प्रोक्वेस्ट, संयुक्त राज्य अमेरिका से इंडेक्स्ड और लिस्टेड हैं।
- शोध पत्रिका का अंग्रेजी एवं हिन्दी संस्करण अलग-अलग प्रकाशित होता है।
- रिसर्च जरनल ऑफ सोशल एण्ड लाइफ साइंसेस का प्रकाशन प्रतिवर्ष जून एवं दिसंबर में किया जाता है।
- रिसर्च जरनल ऑफ सोशल एण्ड लाइफ साइंसेस को इम्पैक्ट फैक्टर एवं आई.एस.एन प्राप्त हैं। शोध पत्रिका Peer-Reviewed हैं।
- शोध पत्रिका के नवीनतम अंक में प्रकाशित शोध पत्रों को हमारी वेबसाइट www.researchjournal.in (Current Issue) में देखा जा सकता है तथा डाउनलोड किया जा सकता है।
- 🍨 शोध पत्रिका का प्रिंट एडीशन सदस्यों को अलग से डाक द्वारा भेजा जाता है।
- शोध पत्र में शीर्षक, नाम, पद, पदस्थापना का विवरण, पत्र व्यवहार का पता तथा दूरभाष क्रमांक,
- मोबाइल नं., ई-मेल एडेस अवश्य दिया जाये।
- शोध पत्र के प्रारम्भ में कम से कम 50-100 शब्दों का सारांश दिया जाये।
- मुख्य शब्द सारांश के नीचे टाइप कराया जाये।

- शोध पत्र में शोध पद्धति तथा शोध में प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण किया जाना चाहिए।
- शोध पत्र में निष्कर्ष और अंत में संदर्भ ग्रंथ सूची दी जाये। संदर्भ ग्रंथों का विवरण पूरा दिया जाये। लेखक का नाम, वर्ष, पुस्तक का नाम, प्रकाशक का विवरण, प्रकाशक का स्थान और पृष्ठ संख्या आदि का विवरण दिया जाना चाहिए।
- शोध पत्र माईक्रोसॉफ्ट वर्ड की फाइल में टाइप किया हुआ होना चाहिए। (नोट- पेज मेकर की फाइल, पी.डी.एफ. फाइल, स्कैन मैटर आदि में कदापि शोध पत्र न भेजें) शोध पत्र हिन्दी लिपि में कृतिदेव या देवलिस फांट 010(फॉन्ट साइज 14, स्पेस डबल, मार्जिन ए-4 साईज के कागज में चारो तरफ 1 इंच) में भेजा जाना चाहिए।
- शोध पत्र के साथ यह घोषणा अवश्य संलग्न करें कि शोध पत्र मौलिक है तथा इसे कहीं अन्यत्र प्रकाशनार्थ प्रेषित नहीं किया गया है।

सर्वप्रथम शोध पत्र ई-मेल द्वारा भेजें-

researchjournal97@gmail.com, researchjournal.journal@gmail.com

शोध पत्र की स्वीकृति की सूचना सम्पादकीय कार्यालय द्वारा लेखक को ई-मेल एवं दूरभाष द्वारा प्रदान की जाती है।

© सेन्टर फॉर रिसर्च स्टडीज

एक अंक रुपये 500.00

	-सदस्यता शुल्क -	
अवधि	व्यक्तिगत सदस्यता	संस्थागत सदस्यता
वर्ष एक	2000-00	2500-00
वर्ष दो	2500-00	4000-00

सदस्यता शुल्क की राशि गायत्री पब्लिकेशन्स के स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, ब्रांच-रीवा सिटी (आईएफएस कोड 0004667 MICR Code 486002003) के खाता क्रमांक 30016445112 में जमा की जाय।

प्रकाशक:

गायत्री पब्लिकेशन्स

रीवा- 486001 (म.प्र.)

मुद्रक:

ग्लोरी ऑफसेट

नागपुर

संपादकीय कार्यालय

186/1, विन्ध्य विहार कॉलोनी लिटिल बैम्बीनोज स्कूल कैम्पस रीवा- 486001 (म.प्र.) दूरभाष- 7974781746

E-mail- researchjournal97@gmail.com, researchjournal.journal@gmail.com www.researchjournal.in

रिसर्च जरनल में प्रस्तुत किये गये विचार और तथ्य लेखकों के हैं, जिनके विषय में सेन्टर फॉर रिसर्च स्टडीज, सम्पादक मण्डल, प्रकाशक तथा मुद्रक उत्तरदायी नहीं हैं। रिसर्च जरनल के सम्पादन एवं प्रकाशन में पूर्ण सावधानी रखी गई है, किन्तु किसी त्रुटि के लिए सेन्टर फॉर रिसर्च स्टडीज, सम्पादक मण्डल, प्रकाशक तथा मुद्रक उत्तरदायी नहीं हैं। सम्पादन का कार्य अव्यावसायिक और ऑनरेरी हैं। सभी विवादों का न्यायालय क्षेत्र, रीवा जिला रीवा (म.प्र.) रहेगा।

सम्पादकीय

समाज की मूलभूत और सबसे महत्वपूर्ण इकाई प्रारंभ से परिवार ही रहा है। देश के सशक्तिकरण एवं विकास के लिए सबसे पहले परिवार जैसी बुनियादी संस्थाओं के नैतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक आयामों पर हमें ध्यान देना अति आवश्यक है। समाज के विकास के लिए परिवार का संतुलित विकास अति महत्वपूर्ण है। अत: हमें यदि देश का संपूर्ण एवं संतुलित विकास करना है तो हमें परिवार नामक बुनियादी संस्था पर सबसे ज्यादा जोर देने की आवश्यकता है। आवश्यकता इस बात की है कि हम परिवार में पुत्र और पुत्री के बीच कोई भी भेदभाव ना करें और यह हम अपने पुत्रों को आवश्यक रूप से समझाएं और उनके क्रियाकलापों में शामिल भी करवाएं। आज भी पुरानी मान्यता के जो लोग हैं, उनका यह मानना है कि औरत को कोई आजादी नहीं मिल सकती, वह अकेले कहीं नहीं जा सकती हैं, वह अकेले कहीं घूम-फिर नहीं सकती हैं, लेकिन इन मूल्यों को आज का युवा मानने से इनकार करता है।

कुछ लोग यह भी कहते हैं कि मकान में जो महत्वपूर्ण स्थान दीवालों का का होता है, समाज में वही महत्व लड़कों की शिक्षा का है। लेकिन घर बनता कैसे है? घर के आधार में कौन हैं? घर के आधार में हमारी पुत्रियां हैं, हमारी लड़िकयां हैं, अर्थात उनका संबंध जड़ से है। समाज में अगर हमारी जड़ ही कमजोर हो गई तो हमारा घर या मकान बिल्कुल मजबूत नहीं हो सकता है। इस सामाजिक संदर्भ को यथार्थ में समझने की आवश्यकता है।

पक्षपात की हद तो तब हो जाती है जब छोटे छोटे कार्यों में हमें भेदभाव दिखता है। कुछ लोगों ख्याल है कि लड़की पराया धन होती है, उसे कौन सी नौकरी करनी है। इसलिए कुछ मां-बाप लड़के और लड़की में भेदभाव करते हैं और यह भेदभाव हमारे व्यवहार में खिलाने-पिलाने में पहनाने-उढ़ाने में भी कहीं ना कहीं दिखाई देता है। यह सरासर अन्याय है। ईश्वर ने लड़के और लड़कियों को एक जैसा मस्तिष्क दिया है और आज लड़कियां बेहतर परिणाम लाकर यह सिद्ध भी कर रही है।

लड़िकयां तो मां-बाप के घर कुछ ही दिन रहती है, इसलिए हमारा यह कर्तव्य है कि हम उनके शिक्षा-दीक्षा, पालन-पोषण पर गहराई से ध्यान दें, तभी हम एक सशक्त समाज की संकल्पना को पूरा कर सकते हैं। ईश्वर ने हमें हमारे बच्चों का ट्रस्टी बनाया है इसलिए हमारा यह कर्तव्य है कि हम पूरे न्याय के साथ सभी सदस्यों के साथ समान व्यवहार करें क्योंकि लड़के और लड़िकयों दोनों में एक जैसी शक्ति है, एक ही आत्मा है। अत: हमें उन्हें विकास का समान अवसर दिया जाना चाहिए।

महिला सशक्तिकरण का मूलभूत उद्देश्य महिलाओं का विकास और उनमें आत्मविश्वास का संचार करना हैं। महिला सशक्तिकरण समाज के संपूर्ण विकास के लिए महत्वपूर्ण है। महिलाओं का सशक्तिकरण सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक प्रघटना है, क्योंकि वे रचनाकार होती हैं। अगर आप उन्हें सशक्त करें, उन्हें शक्तिशाली बनाएं, प्रोत्साहित करें, यह समाज के लिए बेहतर है। महिला और पुरूष सृष्टि निर्माण और मानव समाज के आधार हैं। दोनों एक दूसरे के पूरक है। ये जीवन रूपी रथ के ऐसे पहिये हैं

जिनसे जीवन-यात्रा सुचारू रूप से संचालित होती है। परिवार और समाज में स्थायित्व के लिए दोनों की ही भूमिका समान रूप से महत्वपूर्ण रही हैं। किसी समाज में परिवर्तन और विकास का आधार पुरूषों और महिलाओं के पारस्परिक मेल-जोल, कदम से कदम मिलाकर चलने और दोनों की समान गितशीलता पर ही निर्भर है। किसी भी एक पक्ष के पिछड़ने पर सामाजिक जीवन में अराजक स्थिति निर्मित होती है। मानव जाति का इतिहास इसका साक्षी हैं कि जहाँ महिलाओं की उपेक्षा की गई है, वहाँ समाज का विकास अवरूद्ध हुआ है। सृष्टि की रचना, बच्चों की शिक्षा, परिवार की परवरिश के रूप में महिला की भूमिका पुरूष से कहीं अधिक महत्वपूर्ण होने से समाज रचना में उसकी स्थिति केन्द्रीय हो जाती है। अत: स्त्रियों की उन्नित के बिना मानव जाति और समाज का उत्थान नहीं हो सकता। जहाँ तक भारत का संबंध हैं ''यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते रमन्ते तत्र देवता'' अर्थात् जहाँ महिलाओं की पूजा होती है। वहां देवताओं का वास होता है। इस आदर्श के साथ कोई भी भारतीय स्त्री पश्चिमी स्त्री की तुलना में गौरव का अनुभव कर सकती हैं। विद्या का आदर्श सरस्वती में, धन का आदर्श लक्ष्मी में, पराक्रम का आदर्श दुर्गा में, पवित्रता का आदर्श गंगा में, यहाँ तक कि सृष्टि सृजन का आदर्श जगद् जननी के रूप में हमें केवल भारत में ही देखने को मिलता हैं।

(डॉ. अखिलेश शुक्ल) प्रधान सम्पादक

अनुक्रमणिका

01	वीर सावरकर: भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का एक अविस्मरणीय चरित्र	09
	अरुण श्रीवास्तव	
02	भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उत्तराखंड की महिलाओं का योगदान	15
	राजेश चन्द्र पालीवाल	
03	डॉ. लोहिया का सांस्कृतिक चिन्तन: रामायण मेला योजना के विशेष सन्दर्भ में	20
	सुधा गुप्ता	
04	महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारण्टी योजना का समाजशास्त्रीय	25
	अध्ययन (आगरा जिले के पिनाहट विकासखण्ड के विशेष संदर्भ में)	
	भूरी सिंह, अतुल कुमार	
05	भारतीय जीवन में शिवोपासना का धार्मिक महत्व	30
	अशुतोष शुक्ल	
06	महात्मा गाँधी : महिला विकास के प्रति दृष्टिकोण	39
	सीमा श्रीवास्तव	
07	महिला नेतृत्व के साामाजिक एवं आर्थिक पहलुओं का विश्लेषण	44
	(रीवा जिले की पंचायतों के विशेष संदर्भ में एक सर्वेक्षणात्मक अध्ययन)	
	कोमल पांडे, अखिलेश शुक्ल	
08	महिला अपराधिता पुनर्वास एवं जेल व्यवस्था	53
0.0	गजानन मिश्र	
09	घरेलू हिंसाः वर्तमान समय की गहन समस्या व समाधान	60
10	अलका रानी	((
10	भारतीय अर्थव्यवस्था और वर्तमान आर्थिक चुनौतियाँ: एक विश्लेषण	66
11	बिन्थ्याचल साह नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: सम्भावनाएँ एवं चुनौतियाँ	70
11	नइ राष्ट्राय शिक्षा नाति 2020: सम्मायनाए एवं युनातिया सिद्धार्थ मिश्र	78
12	।सद्धाथ ।मश्र वैश्वीकरण का सामाजिक- आर्थिक प्रभाव	0.2
12		82
12	अजय सिंह गहरवार, अवनीश सिंह, महानन्द द्विवेदी सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योग क्षेत्र में स्टार्टअप योजना	0.2
13	2, , ,	92
1.4	संगीता कुँभारे स्टार्ट अप योजना एवं पिछड़े वर्ग की महिलाओं का	101
14	स्थाट जप पाजना एप पिछड़ पर्ग का महिलाजा का सशक्तिकरण:एक समाजशास्त्रीय अध्ययन	101
	कृष्ण कुमार पटेल, एस.एम.मिश्रा	
15	सतना जिले में सार्वजनिक वितरण प्रणाली की समस्या एवं समाधान	100
13		108
1.0	गायत्री देवी, आर. पी. गुप्ता	115
16	मध्यप्रदेश में कृषि विकास की संभावनाएं एवं चुनौतियां	115
17	सुनीता सोलंकी पर्यावरण एवं मानव स्वास्थ्य (नईगढ़ी-पिपराही के संदर्भ में)	121
1/	वंदना मिश्रा	121
	역도에 (부정)	

18	शहडोल संभाग में पर्यटन विकास का पारिस्थितिकी पर प्रभाव	127
	बी. पी. सिंह, सविता पटेल	
19	समाज और संस्कृति की विकास यात्रा (भारतीय संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में)	133
	दिव्या मिश्रा	
20	शिव ब्रात है?	137
	अशुतोष शुक्ल	
21	श्रीमद्भगवद्गीता में मोक्ष योग	143
	प्रत्यूष वत्सला द्विवेदी	
22	जैवविविधता और मानवीय क्रियाकलाप (पश्चिमी घाट के विशेष संदर्भ में)	147
	सुनील बाबू विश्वकर्मा, आकृति खरे	
23	पराबैंगनी किरणें ओजोन परत को किस तरह प्रभावित करती हैं	152
	मंजरी अवस्थी	
24	भारतीय संस्कृति में स्वदेशी खेलो की प्रासंगिकता का महत्व	156
	ममता	
25	भारतीय संविधान की प्रस्तावना में निहित भावों का विश्लेषणात्मक अध्ययन	166
	पुरूषोत्तम कुमार साहू, अविनाश कुमार लाल	
26	लिंग भेदभाव का महिलाओं के विकास के अवसरों पर पड़ने वाले	171
	प्रभाव का समाजशास्त्रीय अध्ययन (सतना जिले के विशेष संदर्भ में)	
	राधा मिश्रा , अमर जीत सिंह, अजय आर. चौर	
27	महिला एवं बाल विकास योजनाओं का ग्रामीण महिलाओं की पारिवारिक	179
	स्थिति पर प्रभाव (जिला सतना के विशेष संदर्भ में)	
	विमलेश द्विवेदी, अखिलेश शुक्ल	
28	लैंगिक असमानता के कारण एवं समाधान का समाजशास्त्रीय अध्ययन	188
	राधा मिश्रा, अमर जीत सिंह, अजय आर. चौर	
29	महिला नेतृत्व एवं ग्रामीण विकास	194
	(सीधी जिले की त्रिस्तरीय पंचायतों के विशेष संदर्भ में)	
	शिखा पाण्डेय, अखिलेश शुक्ल	
30	बाल मानवाधिकार एवं भारत के समक्ष चुनौतियां	198
	जगदीश प्रसाद, सर्वोत्तम कुमार	
31	भारत में रोजगार की प्रवृत्तियाँ : महिलाओं के विशेष संदर्भ में	203
	कुमुद श्रीवास्तव	
32	पंचायतीराज् अधिनियम का प्रभाव महिला नेतृत्व एवं सामाजिक जागरुकता	210
	(सीधी जिले की त्रिस्तरीय पंचायतों के विशेष संदर्भ में)	
	शिखा पाण्डेय, अखिलेश शुक्ल	
33	अंतर्राष्ट्रीय विधि के अन्तर्गत बच्चों के शिक्षा के अधिकार: भारत के संदर्भ में	117
	जगदीश प्रसाद, सर्वोत्तम कुमार	
34	सल्तनकालीन महोबा	223
	महेन्द्र मणि द्विवेदी, रान् चौरसिया	

सल्तनकालीन महोबा

महेन्द्र मणि द्विवेदीरानू चौरसिया

सारांश- महोबा की वैभवशाली संस्कृति ने सदैव सभी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है। विभिन्न राजाओ-महाराजाओं एवं आक्रमणकारियों ने महोबा विजय का स्वप्न देखा। सल्तनतकालीन सुल्तान भी इसी उददेश्य से महोबा भ्रमण पर आये थे। अलाउद्दीन खिलजी कडा-मानिकपुर का सूबेदार था और अपनी दक्षिण विजय पर महोबा मार्ग से ही निकला था, तुगलककालीन सुल्तानों ने भी महोबा पर अधिकार करने का स्वप्न देखा। तुगलकालीन विभिन्न सूफी सन्तों ने महोबा में इस्लाम का प्रचार किया, जिसका जीवन्त उदाहरण शाही मजिस्द पर लिखा तुगलककालीन शिलालेख (722 हि0/1322 ई0) है। इस शोध पत्र में महोबा पर सल्तनत कालीन विभिन्न राजवंशों के अधिकारों एवं अधिकार क्षेत्रों पर प्रकाश डाला गया है।

मुख्य शब्द - वैभवशाली संस्कृति, अधिकार, सूफी सन्त, राजवंश्स

प्रस्तावना- कुतुबुद्दीन ऐबक ने 1202 ई. में कालिंजर पर आक्रमण कर दिया, जो चन्देल शासक परमर्दिदेव का एक मजबूत सैनिक गढ़ था। कुछ समय तक घेरा चलता रहा किन्तु कोई निष्कर्ष नही निकला। अत: परिमर्दिदेव ने ऐबक से संधिवार्ता प्रारम्भ की किन्तु संधि के पूर्व ही परिमर्दिदेव की मृत्यु हो गयी, यद्यपि प्रधानमंत्री अजयदेव ने विद्रोह प्रारम्भ कर दिया, किन्तु संधि के अतिरिक्त कोई दूसरा विकल्प न था। अत: कालिंजर महोबा और खजुराहो पर तुर्कों का अधिकार हो गया। डॉ. विसेण्ट स्मिथ का कथन है कि ''परिमर्दिदेव की मृत्यु के साथ ही उत्तर भारत से चन्देलों का एक शक्ति के रूप में पतन हो गया और कालिंजर तथा महोबा पर मुस्लिम आक्रान्ताओं का शासन स्थापित हो गया।''

जलाउद्दीन फिरोज खिलजी (1290–1296 ई.) की हत्या कर सिंहासन पर बैठने वाला सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी सिकन्दर के सामान विश्व विजय करना चाहता था, उसने अपनी मुद्रा में स्वयं को सिकन्दर द्वितीय घोषित किया। राजस्थान को जीतेन के पश्चात् वह चन्देरी और मालवा पर विजय का स्वप्न देखने लगा। 1304ई. में ऐनुलमुलक द्वारा किये गये सैनिक अभियान के फलस्वरूप वह ऐसा कर सका। 1309

[•] प्राध्यापक, इतिहास विभाग, शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

^{••} शोधार्थी, इतिहास, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा (म.प्र.)

ई. के दमोह जिला से प्राप्त सलैया सती अभिलेख में खिलजी सुल्तान का नाम अलयदीन लिखा गया है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि पश्चिमी बुन्देलखण्ड से चन्देलों की सत्ता यदि समाप्त नहीं हुयी थी तो लड़खडा अवश्य रही थी और चन्देल खिलजी सत्ता से लुका छिपी का खेल अवश्य खेल रहे रहे थे क्योंकि दमोह जिला से वि.स.1365 में बहमनी सती लेख से ज्ञात होता है कि वहां चन्देलों की अधीनता में बाघदेव प्रतीहार शासन कर रहा था।

चन्देरी राज्य के प्रतिहार म.प्र. में गुना से लेकर सागर, छतरपुर, पन्ना और दमोह तक फैले हुये थे, विभिन्न स्थानो में गजिसह परिहार और वीरराज परिहार के अभिलेखो से यह तथ्य प्रमाणित होता है कि इन परिहारों का केन्द्र दमोह जिला के सिंगोरगढ दुर्ग में था और उनका राज्य पन्ना जिला की व्यारमा नदी के पार कोटरा तक विस्तृत था। 1312 ई. के अभिलेख से ज्ञात होता है कि चन्देरी के गर्वनर इक्तियारूद्दीन तीमूर सुल्तानी की अधीनता में एक उपराज्यपाल वहां नियुक्त था। मोहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल में गर्वनर मिलक दुलची की अधीनता में बटियागढ (दमोह) का उपराज्यपाल बलालुउद्गिखोजा था।

तुर्क शासनकाल से सम्बन्धित फारसी और संस्कृत के अनेक अभिलेख इस क्षेत्र से प्राप्त हुये हैं। दिल्ली सुल्तानों ने लगभग एक शताब्दी तक चन्देरी पर राज्य किया, इसका प्रमाण गयासुद्दीन तुगलक एवं मोहम्मद बिन तुगलक के लिलतपुर से दमोह तक प्राप्त विभिन्न अभिलेखों से ज्ञात होता है। तुगलक ग्वालियर से चन्देरी जाने वाले मार्ग का इस प्रकार वर्णन किया है वह पहले नरवर पिरौन, सिन्ध नदी से अनोतदर जमौला और तत्पश्चात् कछौवा होता चन्देरी पहुंचा। पन्द्रवीं शताब्दी ई. में कछौवा मालवा सल्तनत के अधीन था, इस समय इसे सुतानपुर और कछौवा कहा जाता था, यहां मालवा के शासक सुल्तान होशंगशाह ने 1433 ई. में विश्राम किया था। ग्यारवीं–बारहवीं शताब्दी में ग्वालियर पर कच्छपघात शासक चन्देलों की अधीनता में शासन कर रहे थे।

महोबा क्षेत्र- महोबा चन्देरी और व्यारमा नदी के मध्यवर्ती क्षेत्र में स्थित है। पूर्वी बुन्देलखण्ड में महोबा एकमात्र ऐसा क्षेत्र था जो राजनीतिक एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में चन्देरी राज्य का प्रतिद्वन्दी था। चन्देरी के विकास का मुख्य कारण मालवा की अधीनता थी, अत: चन्देरी ने बारहवीं शती ई. तक ग्वालियर के विद्धानों को अपने यहां बसने के लिये प्रोत्साहित किया। डॉ. जियाउद्दीन देसाई ने अरबी और फारसी के कुछ लेख प्रकाशित किये है, जिससे इस क्षेत्र के इतिहास पर नया प्रकाश पड़ा है। अभिलेखों से ज्ञात होता है कि, महोबा की प्राचीनतम इमारत हि 722/1322 ई. में बनी। महोबा दुर्ग के भैसांखाना दरवाजे के पास वह जर्जर अवस्था में विद्यमान है। अभिलेखों से तलबग्गा के पुत्र राज्यपाल ताजुद्दौला के नाम का उल्लेख है। वह ग्यासद्दीन तुगलक (1320–1325 ई0) के शासन में महोबा का राज्यपाल था। महोबा में सूफियों को सबसे पुरानी दरगाह शेख मुबारक हारूनी की है जो दुर्ग के अंदर विद्यमान है। बर्नी का कथन है कि पूर्वी मालवा के अन्तर्गत महोबा में राज्यपाल का मुख्यालय था, फिरोजशाह के बजीर ने एक आदेश द्वारा बदांयू, कन्नौज, जोनपुर, बिहार, तिरहुत और महोबा से सेनाएं एकत्र की थी।

तारीख-ए-फिरोजशाही में वर्णित है कि महोबा के काजी सद्गुल मुल्क पर

दीवानी का इतना धन शेष निकला उस पर भी सुल्तान फिरोज ने उस पर कठोरता प्रदर्शित नहीं की वह कहता है कि जो तुझ जैसे व्यक्ति का रक्त बहायें उसके सिर पर उसका खून हो, उसने स्वयं निवेदन किया कि अपना रक्त क्षमा कर दिया कहा जाता है कि काजी सद्दुल मुल्क को एक ऐसा रोग हो गया था, जिससे वह मुक्ति असंभव समझता था। इस कारण काजी रूद्रल मुल्क ने महोबा में अनेक युद्ध किये, मौत न होने के कारण वह बच गया। जब उसके जिम्मे आक्ता का धन निकला तो उसने स्वयं निवेदन किया कि मैने अपना रक्त क्षमा कर दिया, तत्पश्चात् सुल्तान के दरबार के समक्ष उसकी हत्या कर दी गयी।"

विवेच्यकाल में इतिहासकारों ने महोबा का सम्बन्ध कड़ा और अबध से जोड़ दिया है, इसका मुख्य कारण ताजुद्दीन के पुत्र मिलकजादा फिरोज का परवर्ती तुगलक काल में दिल्ली में वजीर नियुक्त होना और उसके पुत्र मिलकजादा महमूद को शिक-फिरोजपुर का पद प्रदान करना था। महोबा और राठ को इसी शिक के अन्तर्गत रखा गया था। अत: अब यह पूरी तरह स्पष्ट हो गया है कि शिक फिरोजपुर की सीमा यमुना नदी नहीं थी किन्तु यमुना की स्थिति कालपी के इस छोटे से राज्य के मध्य में थी। इस प्रकार की स्थिति कालपी के मालिकजादा राजवंश के पूरे शासन काल तक बनी रही।

मालिकजादाओं द्वारा 1389-90 ई. 1792 हि. में कालपी राज्य की स्थापना की तभी से महोबा उनके राज्य में सम्मिलित रहा है। महोबा के पूर्व की ओर केन नदी के दूसरे तट पर बहोला का एक बड़ा राज्य था, जिसे पाठा-गहोरा का राज्य कहा जाता है। राजपूतो द्वारा शासित यह राज्य जौनपुर के शर्की सुल्तानो का सहयोगी था।

संदर्भ ग्रन्थ सूची-

- इण्डि एण्टि खण्ड 37 पृ.सं.146
- महाजन बी.डी. मध्यकालीन भारत-एस.चन्द्र नई दिल्ली, नौवां संस्करण-1990 पृ.सं.
 101
- 3. इन्सिक्रप्शन्स ऑफ सी.पी. एण्ड बरार पृष्ठ संख्या 58
- देसाई जेड.ए. एपिग्रिफआ इण्डिका अरेविक एण्ड पर्सिमन सप्लीमेन्ट, 1966, नागपुर पृ.सं. 24-26
- 5. तुगलक कालीन भारत खण्ड-2 पृ.सं. 179 अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, 1967
- 6. मोहम्मद बहादुर खानी-तारीख-ए-मोहम्मदी